चाइना। सर्व अफ्रीका रिट्रीट सेंटर में अभिभावकों एवं बच्चों के लिए आयोजित रिट्रीट में मार्गदर्शन करने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. वेदांती,नैरोबी,केन्या, ब्र.कु. एलिजाबेथ, ब्रदर क्यूरी, ब्र.कु. दीप्ति तथा अन्य।

शांतिवन-मधुबन पावर हाउस। ब्रह्माकुमारीज़ के 'इंडिया वन' सोलार प्लांट के निकट वन मेगा वाट के नये पी.वी. सोलार प्लांट का भूमि पूजन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी तथा राजयोगिनी ईशू दादी। साथ हैं ब्र.कु. ललित, ब्र.कु. सुधीर, ब्र.कु. जयसिम्हा, मनीष कुमार,डायरेक्टर,संहिता टेक्नोलॉजी तथा अन्य।

गणपति बाप्पा मोरया, पुढ़च्या वर्षी लवकर या...

भारत में काफी बड़ी संख्या में लोग गणपति की पूजा अर्चना व साधना करते हैं और अन्य बहुत से लोग जिनके वे इष्ट नहीं हैं, वे भी मुहूर्त अथवा शुभ अवसरों पर सभी धार्मिक आयोजनों का प्रारम्भ गणपति की ही स्तुति से करते हैं। लाखों करोड़ों व्यापारी अपने बहीखातों के प्रारंभ में अथवा अपने व्यापार की गद्दी के निकट स्थल पर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करते हैं। जिसे वे गणपति का सूचक, शुभ तथा लाभप्रद मानते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोग गणपति को सभी देवताओं में प्रथम स्तुत्य मानते हुए अपने कार्य की निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति के लिए अर्चना करते हैं। तब तो हर साल कहते हैं कि 'गणपति बाप्पा मोरया, पुढ़च्या वर्षी लवकर या...।' आप अगर गणपति को ध्यान से देखेंगे तो उनके हाथ, उनका मुख, उनकी हर इंद्रियां कुछ अलंकार लिये हुए हैं। कभी आपने सोचा है कि ऐसी आकृति वाला कोई मनुष्य हो सकता है। तो आइये, हम जानें इस विचित्र के चरित्र का मर्म।

हाथी का सिर

मनुष्य को जितने पशु-पक्षियों का ज्ञान है, उनमें से हाथी ऐसा जीव है जिसे बुद्धिमान माना जाता है। हाथी का सिर विशाल होता है और यह मान्यता प्रचलित है कि हाथी की स्मृति तेज़ होती है। वो अपने माहौल को भली-भांति जानता है और उसे परख सकता है। इसलिए अंग्रेजी में कहावत है 'ऐज़ वाइज़ ऐज़ ऐन एलिफैंट एंड ऐज़ फेथफुल ऐज़ एलीफैंट। जिस मनुष्य को आत्मा और परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान ज्ञात हो और जिसे सृष्टि के आदि मध्य अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में विशाल बुद्धि कहा जाता है। और ऐसा विशाल बुद्धि व्यक्ति जिसे परमपिता परमात्मा की स्मृति बनी रहे और जो परमात्मा के प्रति निश्चयवान एवं श्रद्धावान भी हो, उसके सिर को भी हाथी के सिर के रूप में चित्रित करना युक्तियुक्त है।

हाथी की सूंड (तुण्ड)

आपने हाथी की सिर की बात तो समझ ली, पर शिव पुत्र को सूंड क्यों दी गई है? अगर सूंड की विशेषताओं पर ध्यान देंगे तो देखेंगे कि ऐसा करना तो ठीक है। आपको मालूम ही होगा कि हाथी की सूंड इतनी मज़बूत और शक्तिशाली होती है कि वो वृक्ष को भी उखाड़कर सूंड में लपेटकर ऊपर उठा लेता है, अर्थात् वह बुलडोज़र और क्रैन का कार्य एक साथ कर सकता है। वो सिर्फ वृक्ष जैसी स्थूल चीज़ों को ही ग्रहण नहीं करता, बल्कि सुई जैसी सूक्ष्म चीज़ को भी उठा सकता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञानवान व्यक्ति भी अपनी स्थूल आदतों को जड़ से उखाड़कर फेंकने में सक्षम है तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी धारण करने के लिए और दूसरों को सम्मान स्नेह तथा आदर देने में कुशल होता है। अपने संस्कारों को मूल से पकड़कर फेंकने के लिए हाथी अथवा उसके सूंड जैसी आध्यात्मिक शक्ति चाहिए। सूंड भी ज्ञानवान मनुष्य की कुछेक विशेषताओं का प्रतीक है।

गज कर्ण

हाथी के कान तो पंखे जितने बड़े होते हैं। भला किसी ज्ञानवान को इतने बड़े कान लेने की क्या आवश्यकता है? कान को तो मुख्य ज्ञानेन्द्री माना गया है। जब हम किसी को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बात बताते हैं, तो कहते हैं कि कान खोलकर सुनो। गुरू भी जब अपने शिष्य को मंत्र देता है तो उसके कान ही में उच्चारण करता है। भगवान ने जब गीता ज्ञान दिया, तब अर्जुन ने कानों द्वारा ही उसे सुना। अतः बड़े बड़े कान ज्ञान श्रवण का प्रतीक है।

हाथी की आँखें

गणपति की आँखों को हाथी के समान चित्रित करने के पी छे गहरा

राज़ है। हाथी के नेत्रों की यह विशेषता है कि उसे छोटी चीज़ भी बड़ी दिखाई देती है। जैसे उल्लू की आँखों की एक अपनी विशेषता यह है कि उसकी आँखों की पुतलियां सूर्य की रोशनी में चूंधिया हो जाती हैं, इसलिए वो उसे बंद कर लेता है। बिल्ली की आँखों की विशेषता है कि वो रात्रि के अंधेरे में भी देखने में सक्षम रहती है। वैसे ही हाथी के आँखों की ये विशेषता है कि छोटी चीज़ उसे बड़ी दिखाई देती है। अगर उसे छोटी दिखाई देती, तो वो सबको अपने पांव के नीचे रौंदता हुआ चला जाता। इसी तरह ज्ञानवान व्यक्ति का भ अपना एक विशेष गुण होता है कि वो छोटी में भी बड़ाई देखता है। इसलिए हरेक की महानता उसके सामने उभर आती है। इसलिए वो हरेक को आदर देता है। अ त : ज्ञान के ने त्रों को इस गुण के कारण हाथी के नेत्रों के समान चित्रित करना ठीक ही तो है।

गजवदन

हाथी के कान, नाक, सूंड बड़े बड़े हैं, और उसे स्वयं इतना बड़ा दिखाते हैं, जिसे देख कोई विपरीत व्यक्ति घबरा जाता है। अपने बुरे कर्मों के कारण कोई पकड़ा जाता है तो लोग उसके बारे में कहते हैं कि 'उसका तो मुख छोटा हो गया है।' जब कोई कमज़ोर हो जाता है तब भी उसके बारे में कहते हैं कि इसका तो मुख ही आधा हो गया है। इस प्रकार बड़ा मुख अच्छे कर्मों के कारण, निर्भयता और आत्मिक शक्ति के कारण सामार्थ्य का प्रतीक है।

एक दंत

हाथी के बाहर निकले हुए दो दाँत होते हैं, जो दिखाने के होते हैं। इस संसार में दूसरे लोगों के द्वारा थोड़ा सा भी विघ्न न पड़े, उसके लिए यह ख्याल में रखकर चलना पड़ता है ताकि वो ऐसा ही न समझ ले कि हम उसके विघ्न डालने पर कोई कदम हीं नहीं उठायेंगे। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे पास भी साधन, सम्पर्क और सामर्थ्य है, ऐसा भी कुछ रूप रखना होता है। अपने बचाव के लिए दो दाँत तो न सही, एक दात तो हमारे पास भी है, लोगों को यह मालूम रहने से वे उल्टा कदम उठाने से टल जाते हैं। यह एक दाँत किसी को हानि पहुंचाने के लिए नहीं है, ना ही दूसरों को भयभीत करने की रीति का प्रतीक है, बल्कि यह एक नीति है। ये सूझ-बूझ और दूरदर्शिता का परिचायक है।

एक हाथ में कुल्हाड़ा

गणपति की चार भुजाएं दिखाई जाती हैं, उनमें से एक हाथ में कुल्हाड़ा दिखाया जाता है। कुल्हाड़ा तो काटने का साधन है। ज्ञानवान व्यक्ति में मोह ममता के बंधन काटने और पुराने संस्कारों का मूलोच्छेदन करने की क्षमता होती है। उसी का प्रतीक ये कुल्हाड़ा है।

दूसरे हाथ में बंधन (रस्सी)

गणपति के दूसरे हाथ में बंधन दिखाया जाता है, जो इस बात का प्रतीक है कि दैहिक बंधन को तो ज्ञान रूपी कुल्हाड़े से काटना है, लेकिन स्वयं को दिव्य नियमों रूपी बंधन में बांधना भी है। यह शुभ बंधन है। जिसमें मनुष्य अपनी ही भलाई के लिए बंधना चाहता है। वास्तव में इसे बंधन नहीं, सम्बन्ध कहना चाहिए।

मोदक

मोदक शब्द लड्डू का भी वाचक है और खुशी प्रदान करने वाली वस्तु का भी नाम है। लड्डू बनाने के लिए चने को पीसना, भिगाना, भूनना पड़ता है, तब कहीं जाकर वह प्रिय पदार्थ बनता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति को भी अनेक कठिनाइयों, संकटों, दुसवारियों इत्यादि से गुज़रना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसे तपस्या करनी पड़ती है। जीते जी मरना पड़ता है। और इससे उसमें अधिकाधिक मिठास व ज्ञान का रस भरता है। तब वह स्वयं भी सदा मुदित रहता है और दूसरों को भी मुदित करता है। इस प्रकार हाथ में मोदक का होना, ज्ञान निष्ठा, ज्ञान रस से सिक्त स्थिति का प्रतीक है, और ज्ञान द्वारा प्राप्त मुदित अवस्था का परिचायक है।

वरद मुद्रा

गणपति का एक हाथ सदा वरद मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। क्योंकि जो ज्ञानवान व्यक्ति पुर्वोक्त लक्षणों को धारण कर लेता है, वो दूसरों को भी निर्भयता और शांति का वरदान देने के सामर्थ्य वाला हो जाता है। उसकी स्थिति ऐसी महान हो जाती है कि वह अपनी शुभ मंसा से दूसरों को आशीष प्रदान कर सकता है। अतः वरद मुद्रा वाला हाथ भी ज्ञाननिष्ठ स्थिति की पराकाष्ठा का प्रतीक है।